मीरा एक विचार : समीक्षात्मक अध्ययन

Om Prakash Rathour

सारांश :–

मीरा राजस्थान के मेवाड़ राजघराने की बधू और मेड़ता राजघराने कीकन्या थी। राजपूताना में विषेष तौर पर महिलाओं की आजादी परअंकुष था। पति की मृत्यु के उपरांत पत्नी को आमतौर पर पति कीचिता में कूदकर सती होने की प्रथा थी। लेकिन क्रांतिकारी विचारकी मीरा ने इन सब बंधनों को तोड़ते हुए सती प्रथा का न केवलविरोध किया बल्कि वैधव्य जीवन जीते हुए राजमहल की चारदीवारीसे बाहर निकलकर प्रेममय भक्ति में लीन होते हुए श्रीकृष्ण को पतिरूप में न केवल स्वीकार की बल्कि श्रीकृष्ण को रिझाने के लिए शृंगारभी करने लगी। इन सबसे परिवार के लोग रूष्ट भी हुए और उनकादेवर तो विष का प्याला भी मीराबाई के लिए भेज दिया।विभिन्न समस्याओं और कठिनाईयों को झेलते हुए मीराबाई सामाजिकऔर धर्मिक दोनों परंपरागत बंधन को तोड़ते हुए नई राह पर चलनेका साहसिक कदम उठाया। मीरा हर प्रकार से दुःखी रहीं। उनकाजीवन चिर विरहमयी रहा। जीवन में वह जो न पा सकीं उसे वहभक्ति में पाना चाहती है, किन्तु जीवन दर्द भुलाए नहीं भूलती। अतःसंयोग का गीत गाते–गाते मीरा विरहमयी हो उठती हैं। भक्ति में भीउन्हें चैन नहीं। उन्हें कुल–कलंकिनी कहा जाता है। उनकी हत्या काषड्यंत्र होता है। इसलिए मीरा ने भक्ति के लिए जिस प्रेम की साधनाकी, वह प्रेम बराबर समस्यामूलक रहा। मीरा के पदों में जो उल्लासहै, वह भक्ति की देन है और जो वेदना है, वह जीवन से प्रसूत है।मीरा के जीवन की अनंत कठिनाईयाँ उनकी काव्य में प्रस्फूटित हुईहै। मीरा के इन्हीं भक्तिभावना की पड़ताल करने की एक कोषिषहै।

मूल शब्दः– भवसागर, आत्मनिवेदन, ऐषवर्यषाली, समस्यामूलक स्पृहणीय, भावजगत, सात्विक, माधुर्य,,
भर्त्सना, परिप्रेक्ष्य, प्रामाणिक आदि।

भूमिका :–

मीरा मध्यकालीन भक्त कवयित्री हैं। उनकी कविता में भक्तिभावना की अभिव्यक्ति हुई है। मीरा की भक्ति प्रेम रसमार्गी थी। नाभादास का मीराके प्रति कथन है –''**मीरा ने प्रेमभाव की भक्ति की थी। उनका प्रेम यथा ब्रजगोपिका नाम था और उनके प्रेम का आलम्बन श्रीकृष्ण थे।**''इनकी भक्ति माधुर्य भाव की थी। मीरा की रचनाओं में भक्ति की भावना उनकी विरह भावना से अभिन्न होकर अभिव्यक्त हुई है। मीरा कीप्रेमाभक्ति में कहीं–कहीं वैराग्यमूलक दास्य भावना का समावेष भी देखने को मिलता है।

मीरा और कृष्ण के मध्य जो भावनात्मक संबंध था, वही मीरा की प्रेमाभक्ति थी, जिसे भक्तों एवं संतों ने स्पृहणीय और सर्वोत्तम माना है। मीराके गीतों में यही प्रेमाभक्ति लक्षित होती है।

(1) 'प्रेम भगति से पैण, म्हारो और णा जांणोरीत''
(2) 'मीरा सिरि गिरधर नट नागर, भगति रसीली जाँची री''

अध्ययन का उद्देश्य :–

भक्तिकालीन महिला कवयित्री के रूप में जो स्थान मीराबाई कोमिलना चाहिए वह स्थान किन्हीं कारणों से उन्हें नहीं मिल सका है।राजकुल में पली–बढ़ी होने के कारण उनकी छवि को रमणी या सुंदरीरूप में ही निर्मित किया गया है। मीरा की काव्य पड़ताल कर उनकीइस निर्मित छवि से बाहर निकालकर प्रेम में पगी भक्त की ध्वनि कोप्रदर्षित करने का उद्देष्य है।

शोध पद्धति :–

मीरा से संबंधित विभिन्न पुस्तकों, लेखों, पत्र–पत्रिकाओं तथापुस्तकालयों से समग्री एकत्र करना व अध्ययन करना। इसके अलावेसहयोगियों, मित्रों व विभिन्न कृष्ण भक्त संतों से संपर्क कर सामग्रीसंकलित करना।

मुख्य विषय :–

मीरा की भक्ति को किसी एक पंथ या परंपरा के अंतर्गत रखकरनहीं समझा जा सकता है। क्योंकि मीरा की भक्ति केवल बंधी–बंधाईलीक पर चलनेवाली भक्ति नहीं, समाज और परिवार से विद्रोह है।इसलिए डॉ॰ विष्वनाथ त्रिपाठी, प्रो॰ मैनेजर पाण्डेय, कुमकुम सांगरीतथा परिता मुक्ता आदि विद्वानों ने मीरा की भक्ति को तत्कालीनसामाजिक परिप्रेक्ष्य में रखकर देखा है, जिसमें तत्कालीन सामाजिकरीति–रिवाजों, रूढ़ियों में जकड़ी स्त्री का संघर्ष और मुक्ति कामनाका द्वंद्व अभिव्यक्त हुआ है। मीरा की भक्ति में

संयोग–उल्लास औरविरह–व्यथा दोनों की मार्मिक अभिव्यक्ति है। मीरा के पदों में इसप्रकार संयोग–उल्लास और विरह व्यथा दोनों के रहने के दो कारणहैं। पहली बात तो यह है कि मीरा का प्रेम आध्यात्मिक है, किन्तुमेरा मत है कि उनका प्रेम अलौकिक होते हुए भी लौकिक है।'**गिरधर नागर**' स्थित भावजगत में है लेकिन जिन उपकरणों सेउनका निर्माण हुआ है वे इसी जगत के हैं। वे मीरा के जीवन संघर्षसे उपजे हैं। आध्यात्मिक प्रणय मानसिक होगा, शारीरिक नहीं।उनका संयोग–वियोग मानसिक प्रतीति मात्र हैं। स्वभावतः भक्ति केउमंग में भगवान पास दीखता है, किन्तु भौतिक व्यवधानों के कारणवह पकड़ में नहीं आता और पास होकर भी दूर जान पड़ता है।दूसरा कारण यह है कि मीरा का वास्तविक जीवन दुखों से भरा था।बचपन में मां मर गई, जवानी में स्वयं विधवा हो गई। देखते–देखतेपिता का सहारा भी छूट गया। देवर के अत्याचारों का पारावार नरहा। चिर विरहमय जीवन के कारण ही जो वह जीवन में न पासकीं उसे भक्ति में पाना चाहती है। उनके समस्या मूलक प्रेम में जोअथक वेदना है और उस वेदना में जो अथक प्रेम है, वह इस तरहसे व्यक्त हुआ।

'हे री मैं तो दरद दिवाणी, मेरा दरद न जाणै कोय।
सूली ऊपर सेज हमारी, सोना किस विधि होय।
सुख संपति में सब मिलि आवै, दुख में बलम न कोय।
मीरा के प्रभु पीर मिटैगो, जब वैद सांवलिया होय।

हिन्दी में समस्यामूलक प्रेम का जैसा चित्रण मीरा बाई ने किया वैसाअन्य से नहीं हो सका। प्रेम के दर्द की ऐसी तस्वीर आंकने वालाभी दूसरा कवि नहीं हुआ। सम्भवतः पारिवारिक, सामाजिक क्लेषों,प्रताड़नाओं और निन्दा आदि बाधाओं के सम्मुख आने पर मीरा काअन्तस जब स्वयं को आश्रयहीन अनुभव करता होगा तब उन्हीं क्षणोंप्रभु की सार्थकता, भक्तवत्सलता के समक्ष दया याचना करने कीओर वे प्रवृत हुई होंगी।

नारद भक्ति–सूत्र में भक्ति को द्विधा कहा गया है

(1) प्रेमरूपा और (2) गौणी

(1) प्रेमरूपा : कर्म, ज्ञान एवं योग से भी श्रेष्ठ **'प्रेमरूपा भक्ति'** कोमान्यता मिली है। मीरा के गीतों में सर्वत्र प्रेमरूपा भक्ति का ही मूलस्वर बिखरा हुआ है। इस भक्ति में डूबकर मीरा पूर्णतया गिरधरमयहो गई थीं। सांसारिक राग, विषयों को विष सदृष ही त्याग दियाथा। मीरा की यही प्रेमरूपाभक्ति निम्न पंक्तियों से गोचर होती है –

'भयाँ बावरा सुध बुध भूलाँ, पीव जाण्या म्हारी बात'
'इमरित पाई विषक्यूँ दीजै'
प्यालो इमरित छाड़या रे कुण पीवां कड़वां नीर पारी'

इस पंक्ति को प्राप्त करके भक्त समस्त सांसारिक बंधनों से मुक्त होजाता है। वह सिद्ध, अजर और तृप्त हो जाता है।अतः मीरा के गीतों से भी यही ध्वनित होता है कि वे प्रेमरूपा भक्तिका प्रसाद पाकर सांसारिक बंधनों से पूर्णतया मुक्ति पा चुकी थींऔर सिवाय गिरघर के उनकी सारी आकांक्षाएं समाप्त हो चुकी थीं।अतएवं भातएवं मीरा की प्रेमाभक्ति का आलंबन जो कृष्ण रूप है,जिसमें उनके लोभी नयन अटके फिर वापस न आ सके, यानी उसीरूप में संलग्न रह गए, उसका अनुभव मीरा को जिस परिस्थिति मेंहुआ वह द्रष्टव्य है –

'म्हां ठाढ़ी घर आपणे मोइन निकल्यां आय' (पद 13) मीरा कीपदावली

अन्य स्थान पर मीरा ने लिखा –

'कब री ठाढ़ी पंथ निहारां अपने भवन खड़ी (पद 14) मीरा कीपादावली

अपितु कृष्ण से मिलन का अर्थ भावजगत में कृष्ण का मिलन। अर्थातसाधु संगति में कृष्ण गुण कीर्त्तन। इस उद्देष्य की पूर्ति राणाकुलसे बाहर आकर सामान्य जीवन में धुलने मिलने से ही हो सकतीथी। मीरा ने लिखा –

'मीरा तो गिरधर बिन देखे, कैसे रहे घर बसि के (पद 7)

मीरा की भक्ति उतना ऐकांतिक नहीं है जितना समझ लिया जाताहै। भक्ति के कारण वे सामाजिक हैं।

(2) गौणी भक्ति : मीरा के गीतों में गौणी भक्ति के उदाहरण बहुतकम मिलते हैं। गौणी भक्ति के गुणभेद के आधार पर (क) तामसी(ख) राजसी एवं (ग) सात्विक, भेद किए गए हैं। उनमें से केवलसात्विकी गौणी भक्ति मीरा में है। मीरा की एकमात्र कामना यही हैकि –

'मीरा के प्रभु कब रे मिलेगां, थे विण रह्या णा जाये।'

सात्विक भक्ति के अन्तर्गत मीरा ने अपने समस्त कर्म–फलों कोभगवान के श्री चरणों में समर्पित कर दिया था। भवसागर से उद्धारकी चिन्ता, लोक–लाज, भय सब कुछ अपने गिरधारी के प्रति समर्पितकर स्वयं निष्चित हो गई थी।राजसी और तामसी गौणी भक्ति की मीरा को न तो आवष्यकता हीथी, न ही अवकाष।

गौणी भक्ति के आर्त्त विभेद के अन्तर्गत तीन भेद और किए गए है

(1) अर्थार्थी
(2) जिज्ञासु
(3) आर्त।

इनमें से मीरा में केवल आर्त भक्ति के उदाहरण ही मिलते हैं। साधनभेद की दृष्टि से भक्ति के दो भेद किए जाते हैं –

(1) अपरा और (2) परा

अतएव मीरा की भक्ति 'परा भक्ति' के अन्तर्गत आती है। इस भक्तिमें लक्ष्य की प्राप्ति ही सबकुछ है। इसके विपरीत 'अपरा' भक्तिसाधनों पर जोर देती हैं। मीरा की ही समस्त आकांक्षाएं, आषाएं औरसाधना का लक्ष्य प्रियतम श्रीकृ"ण की प्राप्ति है। अतः पराभक्ति हीमीरा की अभिप्रेत है। शास्त्रीय दृष्टि से पराभक्ति के छः भेद किएगए हैं–

(1) सिद्धा (2) प्रेमलक्षणा
(3) निष्काम (4) दुर्लभा
(5) अनन्या (6) निर्गुण

ये सारे भेद मीरा के गीतों में मिल जाते हैं।

मीरा की नवधा भक्तिः–

मीरा की संपूर्ण पदावली पर विषद दृष्टि डालने पर नवधा भक्ति केप्रायः समस्त उपादान लक्षित होते हैं।

श्रीमद्भागवत् में कहा गया है''श्रवणं कीर्त्तनं विष्णोः स्मरणं पाद सेवनम्। अर्चनं बंदनं
दास्यंसख्यमात्म निवेदनम्।''

अर्थात् श्रवण, कीर्त्तन, ईष्वर स्मरण, पाद सेवन, अर्चन, वन्दना,दास्यभक्ति, सख्य तथा अत्मनिवेदन। भक्ति इन्हीं नौ प्रकार की होतीहै। मीरा काव्य में नवधा भक्ति मौजूद है। मीरा ने भक्ति के सारेतत्व अपनाएं हैं। उनकी रचना में स्वाभाविक रूप से भक्ति के सारेरूप धुल–मिल गये हैं। सामान्यतः मीराबाई की सगुणोपासना संबंधीपदों को ध्यान में रखकर विद्वानों ने मीराबाई की भक्ति–भावना कोवैष्णव परंपरा का माना है। वैष्णव भक्ति में भक्ति के छःअंग–आनुकुल्य–संकल्प, प्रातिकूल्य–वर्जन, गोप्तृत्व–वरण,रक्षण–विष्वास, आत्म निक्षेप, कार्पण्य माने गए हैं। इसी प्रकार भक्तिकी सात भूमिकाएं – दीनता, मानमर्षता, भर्त्सना, भयदर्षन, आष्वासन,मनोराज्य तथा विचारण मानी गई है। कुछ विद्वानों का मानना है किये सब मीरा बाई की सगुणोपासना संबंधी पद किस परंपरा में आतेहैं, यह अलग शोध का विषय है, परन्तु इतना स्पष्ट है कि मीरा केकृष्ण अवतारी हैं। उन्होंने द्रौपदी की लाज बचाई थी, प्रह्लाद केलिए नरसिंह रूप धारण किया था और डूबते हुए गजराज को उबाराथा। यथा–'हरि, तुम हरहु जन की भीर। द्रोपदी की लाज राखी तुरतबढ़ालो चीरभक्त कारन रूप नर हरि धर्‌यों आपु शरीर हरिनकसिपु मारिलीन्हौं धर्‌यो नाही धीरबूड़तो गजराज राख्यों कियों बाहर नीर। दासी मीरा लाल गिरधरचरण कंवल पै सीर।।

ये ही सगुण गिरिधर गोपाल मीरा के सबकुछ हैं, ये ही मीरा केस्वामी हैं यथा –
मेरे तो गिरिधर गोपाल, दूसरों न कोई जाके सिर मोर मुकुट,मेरो पति सोई।

प्रासंगिकता :–

आज जब विभिन्न प्रकार के संत महात्माओं, साध्वियों ने भक्ति कोबाजार में परिवर्त्तित करके भक्ति का व्यावसायीकरण कर रखा है वविभिन्न प्रकार के कुकृत्यों में संलग्न रहते हैं तो ऐसे समय में मीराबाईकी भक्ति भावना की प्रासंगिकता और भी बढ़ जाती है। आज भारतमें जहां आसाराम बापू, बाबा राम रहीम, बाबा रामपाल, बाबा नित्यानंदस्वामी आदि संत व राधे माँ जैसी तथाकथित साधिका समाज केआंखों में धूल झोंककर धार्मिक चोला पहनकर न केवल करोड़ों रूपयेजमा कर रखे हैं बल्कि लोगों की धार्मिक भावना और आस्था कालाभ उठाकर भक्तों के साथ अनाचार में भी लिप्त पाया जा रहा हैतो मीराबाई के संघर्ष व त्याग की प्रासंगिकता और बढ़ जाती है।विष्वनाथ त्रिपाठी के अनुसार पीड़ित नारीत्व को भूलकर मीरा कीभक्ति को नहीं समझा जा सकता। मध्यकाल का पुरूष भक्त होने केलिए जाति–पांति, धन, धर्म, बड़ाई छोड़ता था, तो स्त्री कोलोक–लाज, कुल–शृंखला तोड़नी पड़ती थी। मीरा ने अपनी भक्तिके माध्यम से संपूर्ण मध्यकालीन भारतीय नारी की व्यथा को व्यक्तकिया है। प्रो॰ मैनेजर पाण्डेय कहते है ''कबीर, जायसी और सूर केसामने चुनौतियां भावजगत की थीं। मीरा के सामने भावजगत सेअधिक भौतिक जगत की सीधे पारिवारिक और सामाजिक जीवन कीचुनौतियां, कठिनाईयां थी। उस पुरूष प्रधान सामंती समाज में एकस्त्री, वह भी मेड़ता के राठौर राजपूत कुल की बेटी और मेवाड़ केमहाराणा परिवार की बहू, ऊपर से विधवा। यही था मीरा का अपनालोक। उसके धर्म और उसमें स्त्री की स्थिति का अनुमान किया जासकता है। लेकिन उसके विरूद्ध विद्रोह की कल्पना भी कठिन है।फिर भी मीरा ने उस आंतककारी लोक और उसके भयावह धर्म केविरूद्ध खुला विद्रोह किया। उस विद्रोह के साक्षी है उनका जीवनऔर काव्य।'' जबकि कुमकुम सांगरी ने मीरा की भक्ति पर प्रकाषडालते हुए अपने विस्तृत विवेचन द्वारा स्पष्ट किया है कि ब्राह्मणवादीव्यवस्था सूत्रबद्ध हैं, जिसमें एक चीज को मानने पर सारी चीजों कोमानने के लिए बाध्य होना पड़ता है। मीरा बार–बार अपने पदों मेंकृष्ण को पूर्व जन्म का साथी और मीत बताती है और मीरा की प्रीतिजनम–जनम की है। कृष्ण के लिए लौकिक जगत के बंधनों केअस्वीकार को, मीरा पूर्वजन्म की प्रीति के माध्यम् से सही ठहरानाचाहती हैं। परिवार और

कुल त्याग को मीरा माया का त्याग बतातीहैं। मीरा की भक्ति शास्त्र सम्मत भक्ति है, जिसमें पूर्वजन्म, माया,सबका समावेष है। ब्राह्मणवादी व्यवस्था द्वारा बनाए गए ईष्वर केद्वारा ही मीरा राजसत्ता को चुनौती देती हे, इस प्रकार भक्ति मीराके लिए शरणस्थली भी है और विद्रोह का माध्यम भी।इसीलिए मीरा की प्रासंगिकता आधुनिक काल में और भी बढ़ जातीहै जब समाज में विभिन्न प्रकार की समस्याएं नारी के सामने उपस्थितकी जाती है। मीरा आज की नारी का प्रेरणाश्रोत बन सकती है।

निष्कर्ष :–

मीराबाई की कविता की विषेषता है, सच्ची अनुभूति, मार्मिक संवेदनाऔर हार्दिक आवेग। चुंकी मीरा ने जीवन में दर्द पीया था, इसलिएवे दर्द का तलस्पर्षी वर्णन कर सकीं। **‘दरद–दिवाणां’** का **‘दरद’**अनुभूति अनिर्वचनीय हे। मीरा की वेदना सीधे उनके जीवन से है।इसीलिए मीरा की वेदना आत्मा की तारों को झकझोर देती है। मीराकी विरह–वेदना में जो मर्मस्पर्षी मार्मिकता है, उसका कारण सच्चीअनुभूति और निष्चल अभिव्यक्ति है। इस प्रकार मीरा के पदों मेंसगुण मत का स्पष्ट झलक है।अतः कहा जा सकता है कि मीरा के यहां एक साथ अंषातः निर्गुणएवं सगुण भक्ति स्वरूप मौजूद है। ‘गिरिधर नागर’ की भक्ति सबकेप्रति एक सी है। यही मीरा की भक्ति की विषिष्ट पहचान है जोअन्य भक्त कवियों से भिन्न है। मीरा की भक्ति भावना पर दृष्टिपात करने से पता चलता है कि मीराके गीतों में नवधा भक्ति के सभी अंग उपलब्ध होते हैं किन्तु सर्वाधिकमहत्वपूर्ण तथ्य है कि मीरा ने नवधा भक्ति के उदाहरण प्रस्तुत करनेकी दृष्टि से गीत रचना नहीं की थी, अपितु स्वमेव उनके गीतों मेंनवधा भक्ति के समस्त अंगों का सम्मिलन हो गया है। यही सहजता,स्वाभाविकता और अकृत्रिमता, गीतिकाव्य की अन्यतम विषिष्टता केरूप में मीरा के काव्य में चरितार्थ हुई है। अतः मीरा की भक्ति परनिर्गुण तथा सगुण मत को लेकर विद्वानों में मतभेद अवष्य रहा है,किन्तु मीरा के ‘गिरघर नागर’ का जो रूप निर्मित हुआ है उस परमूर्त्ति की निर्मात्री का बहुत गहरा प्रभाव है। ‘गिरधर नागर’ स्थितभावजगत में हैं, लेकिन जिन उपकरणों से उनका निर्माण हुआ है, वेइसी जगत के हैं। वे मीरा के जीवन संघर्ष से उपजे हैं। उस मूर्तिमें मीरा की पीड़ा शामिल होकर रूपांतरित हो जाती है। अभाव हीसमाप्त नहीं होते। विष बुझता ही नहीं, अमृत में बदल जाता है। इसतथ्य से स्पष्ट है कि डॉ॰ विष्वनाथ त्रिपाठी ही नहीं बल्कि डॉ॰ प्रभात,परषुराम चतुर्वेदी, मीरा के निर्गुणोपासना संबंधी पदों को प्रामाणिकमानते हुए भी उन्हें सगुणोपासक भक्त मानते हैं। डॉ॰ प्रभात ने अपनेशोध–प्रबंध में प्रकाष डालते हुए माना है कि मीरा की समस्त साधनाकृष्ण के सगुण–साकार अवतारी रूप पर ही केन्द्रित है। वस्तुतः यहीरूप उनकी आराधना का एकमात्र लक्ष्य है। इसी प्रकार परषुरामचतुर्वेदी का मानना है कि मीराबाई द्वारा किए गए इष्टदेव के निर्गुणमत निरूपण तथा उसकी प्राप्ति के लिए प्रयोग में आनेवाली चारित्रिकसाधनाओं के आधार पर कुछ लोग उन्हें संतमत की अनुयायिनी मानलेना चाहते हैं, किन्तु ऐसा कहना उचित नहीं जान पड़ता। मीरा नेअपने अनेक पदों में उक्त अविनाषी हरि, कृष्ण को ही परमऐषवर्यषाली एवं लीलामय भगवान के रूप में अंकित किया है। परितामुक्ता वा मानना है कि ‘‘मीरा की भक्ति शास्त्र और समाज कीपरंपरागत मान्यताओं से अलग है। मीरा राणा के लिए चूड़ी नहींपहनतीं, शृंगार नहीं करती, जबकि विधवा होने पर भी कृष्ण के लिएसारा शृंगार करना चाहती है, पैरों में घूंघरू बांधकर कृष्ण को रिझानाचाहती है। अतः मीरा की भक्ति को उनके संघर्ष और विद्रोह सेअलग करके नहीं देखा जा सकता’’।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1ण अपहोल्डिंग ऑफ कॉमन लाइफ दि कम्युनिटी ऑफ मीरा बाई :परिता मुक्ता, पृ॰ 33, 100
2ण इकोनोमिक एंड पोलिटिकल वीकली : कुमकुम सांगरी (7.14जुलाई 1990) पृ॰ 1468
3ण मीरा की पदावली : पद 13, पद 14, पद 7
4ण हिन्दी गीतिकाव्य परम्परा और मीरा : सं॰ डा॰ मंजु तिवारी, पृ॰132, 133, 139
5ण मीरा का काव्य : डॉ॰ विष्वनाथ तिवारी, पृ॰ 86, 57, 72
6ण स्त्री चेतना और मीरा का काव्य : पूनम कुमारी, पृ॰ 97, 98,205, 107
7ण भक्ति आंदोलन और सूरदास का काव्य : मैनेजर पाण्डेय, पृ॰41